P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-1) December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

राम गोपाल वर्मा के सृजन के विविध आयाम

नीलम
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
एम0जे0डी0 महाविद्यालय,
सहारनपुर

सारांश

बहुमुखी काव्य–प्रतिभा के धनी प्रो0 राम प्रकाश गोयल ने जहाँ साहित्य की विविध विधाओं को अपनी काव्य–प्रतिभा के द्वारा सजाया–संवारा है वहीं उन्होंने अपने व्यक्तित्व के द्वारा एक सच्चे इन्सान के किरदार को भी बखूबी निभाया है। प्रस्तुत शोध पत्र के व्यक्तित्त्व के विविध आयामों की चर्चा है यहाँ पर क्रमशः उनके गद्य साहित्य और पद्य साहित्य का साहित्यिक अनुशीलन है।

मुख्य शब्द : साहित्य, काव्य, सृजन, विधाएं, अभिव्यक्ति।

प्रस्तावना

प्रो0 राम प्रकाश गोयल जी को साहित्य में बचपन से ही अत्यधिक रूचि रही है। बरेली में होने वाले कवि सम्मेलनों और काव्यागोष्ठियों में वे श्रोता के रूप में सदैव जाते थे। अपने साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए डॉ0 गोयल ने शोधार्थिनी को बताया ''सन् 1937 में जब मैं सातवीं कक्षा का छात्र था तब मधुशाला के अमर रचयिता डॉ0 हरवंश राय बच्चन– बरेली कॉलेज में पधारे थे उनके श्रीमुख से मैंने मधुशाला सुनी थी। 1941 एवं 1942 में बरेली में हमारे साहित्यिक मित्रों ने कवि दरबार के आयोजन किये थे। उनमें मैंने पं0 सुमित्रानन्दन पन्त और पं0 माखनलाल चतुर्वेदी का अभिनय कर उनकी कविताओं का पाठ किया था। नगर के सभी प्रमुख साहित्याकारों से मेरा घनिष्ठ परिचय था। उनके सम्पर्क और प्रेरणा ने मुझे बहुत कुछ सिखाया। उनके नाम हैं। सर्व श्री निरंकार देव सेवक, होरी लाल शर्मा, 'नीरव', सतीश चन्द्र 'सन्तोषी', रघुनाथ सहाय 'वफा', मेरे बड़े भाई सूरज प्रकाश गोयल, अनवर चुगताई, किशन सरोज, बृजराज पाण्डेय, श्रीमती ज्ञानवती सक्सेना, श्रीमती राज कुमारी 'रश्मि', श्रीमती शान्ति अग्रवाल आदि। नगर के प्रख्यात फौजदारी वकील बाबू राम जी शरण सक्सेना के शिष्यत्व में 1951 में मैने वकालत आरम्भ की। बाबू जी न केवल एक प्रखर और तेजस्वी वकील थे। वरन् उच्च कोटि के कवि और शायर भी थे। 1960 में अपने अन्य साहित्यिक मित्रों के सहयोग से गोयल जी ने बरेली में साहित्त्यक संस्था 'आलोक' का गठन किया। 'आलोक' के तत्वावधान में 1965 में अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन प्रयाग का प्रान्तीय अधि वेशन बरेली में हुआ, जिसकी अध्यक्षता पं0 कमलापति त्रिपाठी मुख्यमन्त्री उ0प्र0 ने की थी। 1964 में 'आलोक' द्वारा 'भोर का तारा' नामक एकांकी नाटक का सचंन किया गया। किन्तु कवि रूप में उनकी काव्य–प्रतिभा छिपी ही रही, उनका यह कवि बाहर सन् 1984 में तब आया जब मात्र साढ़े सोलह वर्ष की आयु में गोयल जी के एक मात्र पुत्र– विवेक गोयल को काल के क्रूर हाथों ने सदैव के लिए उनसे छीन लिया। अपने पुत्र के विछोह को उन्होंने काव्य के माध्यम से प्रकट किया और इस प्रकार सन् 1987 में गजल संग्रह 'दर्द की छाँव में' प्रकाशित हुआ। इस संग्रह के प्रकाशित होने के बाद गोयल जी को कवि के रूप में स्वीकारा जाना आरम्भ हो गया। प्रथम गज़ल संकलन के पश्वात राम प्रकाश गोयल की लेखनी ने विराम नहीं लिया।

अध्ययन का उद्देश्य

बहुमुखी काव्य–प्रतिभा के धनी प्रो0 रामप्रकाश गोयल ने जहाँ साहित्य की विविध विधाओ को अपनी काव्य प्रतिभा के द्वारा सजाया सँवारा है। वही उन्होने अपने व्यक्तित्व के द्वारा एक सच्चे इन्सान के किरदार को भी बखूबी निभाया है प्रस्तुत शोध पत्र उनके व्यक्तित्व के विविध आयामो की चर्चा है यहा पर क्रमशः उनके गद्य साहित्य और पद्य साहित्य का साहित्यिक अनुशीलन है।

गद्य के क्षेत्र में सृजन

प्रो0 राम प्रकाश गोयल ने प्रमुख रूप से गद्य के क्षेत्र में 'टूटने सत्य' नामक उपन्यास का सृजन किया है। इसके अतिरिक्त 'दिल और दिमाग' नामक नाटक की रचना भी की है। साथ ही उनके द्वारा सम्पादित कुछ उनकी 'आकाशवाणी की वार्ताएँ' और 'सच्चे प्रेम पत्र' भी हैं। इस प्रकार, उनका गद्य

साहित्य के क्षेत्र में सृजन, पद्य साहित्य की तुलना में अल्प ही है लेकिन जो है, वह स्तरीय है। जिसमें उन्होंने मूल्यों की प्रतिष्ठा की है। जीवन और जगत के विविध क्षेत्रों से प्रमुख रूप से आपने समस्याओं को लिया है, और उन्हें यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान की है।

टूटते सत्य

प्रेरणा पाकेट बुक्स, सुभाष नगर, बरेली (उ0प्र0) द्वारा सन् 1972 ई0 में प्रकाशित 'टूटते सत्य' प्रो0 रामप्रकाश गोयल द्वारा विरचित त्रिकोण प्रेम पर आधारित एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। नारी भावना प्रधान होती है, तर्क प्रधान नहीं। प्रेम अद्वितीय कोमल भावना है। जो जाति, कुल, देश और बन्धन की सीमा से परे होती है। लेखक ने इस शाश्वत सत्य को करीब से देखा है, परखा है और अभिव्यक्त किया है। भावना–प्रवाह में बहती साधना जहाँ पत्नीत्व को त्याग कर रवि के प्रेम को अपनाना चाहती है, वहीं आदर्श प्रेमी रवि उसे अपने कर्त्तव्य की शिक्षा देता है। 'नारी का व्यक्तित्व पुरूष पर आश्रित है' सुशील की मृत्यु के बाद निशि और आसित का वैवाहिक सम्बन्ध और सुखी जीवन व्यक्त करता है।

साहित्य क्षेत्र में इस उपन्यास की बड़ी चर्चा हुई है। डॉ0 महाश्वेता चतुर्वेदी, डॉ0 महेश 'दिवाकर', ईश्वर सिंघल, आचार्या सारगांदेश 'असीम', हरिशंकर सक्सेना–प्रभृति साहित्य–समीक्षकों ने इस उपन्यास की समीक्षाएँ लिखकर इसकी विशिष्टता प्रतिपादित की है। 'टूटते सत्य' नामक उपन्यास का अध्ययन एवं मनन करने के उपरान्त यह सत्य सामने आता है कि 'टूटते सत्य' एक मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास है जिसमें पात्रों के बाह्य रूप रंग की अपेक्षा आन्तरिक द्वन्द्वों का चित्रण है। कुंठाओं का इसमें सूक्ष्म निरूपण है। इसमें संघर्ष का उदय 'प्रेम' को लेकर हुआ है और अन्ततः प्रेम की परिणति असफलता से हुई है। इसके सभी पात्र व्यक्तित्व प्रधान हैं। प्रभा, साधना, निशि, अनिल, रवि एवं असित आदि पात्र परस्पर विश्रृंखलित होते हुए भी एक श्रृंखला में बंधे हैं। इसी प्रकार, उपन्यास में अन्य अनेक स्थल संवादों को संवादकीय गरिमा प्रदान करते हैं। प्रो0 राम प्रकाश गोयल को इस कला में दक्षता प्राप्त है।

'टूटते सत्य', निस्सन्देह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है, जिसमें 'प्रेम' और 'वासना' की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। इसमें समाहित पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार ने आधुनिक सभ्यता के खोखलेपन एवं अनैतिकताओं पर कटाक्ष किया है। जहाँ विवेक का दीप बुझ जाता है, वहाँ दुराशा का दुर्निवार अन्धकार अन्तर से बाहर तक व्याप्त हो जाता है। उस अन्धकारमय पथ पर व्यक्ति चलने लगता है, और अपने गन्तव्य से भटक कर पतन के गर्त में गिर जाता है। खोखली और असत्य उपलब्धियों की मृग मरीचिका अन्ततः उसका सर्वस्व हरण कर लेती है, और शेष रह जाता है केवल धुँआ। यही 'टूटते सत्य' नाटक उपन्यास का महानतम् लक्ष्य प्रतीत होता है।

'टूटते सत्य' में जीवन के घोर एवं घृणित यथार्थ के साथ–साथ कुछ पात्रों के माध्यम से जीवन के उच्च आदर्शों को भी प्रतिपादित किया गया है। उपन्यासकार की लेखनी यथार्थ और आदर्श के चित्रण में प्रशंसनीय रूप से निष्पक्ष रही है। इसी प्रकार, प्रेम और वासना की व्याख्या भी उपन्यास में बड़े ही तार्किक एवं व्यवहारिक रूप में की गयी है। यथा–

''..... वासना भी प्रेम का एक आवश्यक अंग है। प्रेम का प्रकटीकरण प्रायः वासना के माध्यम द्वारा होता है। जिसे हम प्रेम कहते हैं, वह शुन्य में नहीं रहता। उसको भी कोई आधार चाहिए। जिसे वासना कहकर गर्हित समझा जाता है, वह इतनी हेय नहीं, वरन् एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है।'' वास्तव में, त्रिकोणात्मक प्रेम पर आधारित यह उपन्यास आज के जीवन यथार्थ की मुखर अभिव्यक्ति है। उपन्यास के सभी पात्रों का परस्पर प्रेम त्रिकोणात्मक है जो उपन्यासकार द्वारा सर्वथा एक नवीन प्रयोग का अहसास कराता है।

'दिल और दिमाग' एक मनोवैज्ञानिक एवं समस्या प्रधान नाटक है जिसमें नाटककार प्रो0 रामप्रकाश गोयल ने चार पात्रों की सर्जना की हैं ये पात्र हैं– 'दिल' (हृदय पक्ष) और 'दिमाग' (बुद्धिपक्ष)। इन दोनों पात्रों की ही क्रमशः एक सन्तान की सृष्टि भी की गयी है। जिसमें 'प्यार' दिल की बेटी है तो 'विचार' दिमाग का बेटा है।

> दिल– मैं इंसान का दिल हूँ। जन्म से लेकर मृत्यु तक आदमी का साथ देता हूँ। जब तक धड़कता हूँ, तब तक आदमी जिन्दा हता है। मैं सबसे वफादार दोस्त हूँ– इन्सान का। बहुत साफ–सुथरा हूँ, सीधा–सच्चा हूँ। कभी लगी –लिपटी बात नहीं करता। कला, साहिय, संगीत, कविता, संस्कृति सब मेरी ही तो संतान हैं। मेरी सबसे प्यारी संतान – मेरी बेटी 'प्यार' है। प्यार के बिना कोई व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता।
>
> प्यार– पिताजी, मेरा नाम लिया आपने । आज अपनी बेटी 'प्यार' को कैसे याद किया आपने?
>
> दिल– अरे, बेटी प्यार–तुम तो हमेशा मुझे में समाई रहती हो। बेटी, तुम मुझ से अलग होही कहाँ?

इस प्रकार, परस्पर सहयोग और प्रेम के समन्वय और सौहार्द के आश्वासन के साथ 'दिल और दिमाग' नाटक का पटाक्षेप हो जाता है। साधारणतया यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि प्रो0 रामप्रकाश गोयल को नाटक लेखन की कला में भी दक्षता प्राप्त है।

सच्चे प्रेम पत्र

इस गद्य कृति के सम्पादक और संकलनकर्ता प्रो0 राम प्रकाश गोयल ने डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0 लि0 दरियागंज, नई दिल्ली के द्वारा सन् 1992 में इसका प्रकाशन कराया था। इस पुस्तक में प्रेमी प्रेमिकाओं के सच्चे प्रेम पत्र हैं। दिल्ली से प्रकाशित महिलाओं की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'गृह लक्ष्मी' ने भी इसके अनेक पत्रों को प्रकाशित किया है। 200 पृष्ठों के कलेवर वाली इस मनोरम गद्य कृति का मूल्य 20/– मात्र है। डॉ0 अनिता जौहरी, डॉ0 एन0एल0 शर्मा, डॉ0 निर्मल, डॉ0 ब्रजमोहन सिंह प्रभृति समीक्षकों ने इस प्रेम पत्रों की सम्पादन कला की भूरि–भूरि प्रशंसा की है।

आकाशवाणी वार्ताएं

यह प्रो0 रामप्रकाश गोयल की सम्पादित गद्यकृति है। प्रो0 राम प्रकाश गोयल के अतिरिक्त डॉ0 कौशल नन्दन गोस्वामी और डॉ0 शम्भुशरण शुक्ल भी उनके साथ–साथ सम्पादक हैं। इसमें प्रो0 रामप्रकाश गोयल सहित 33 वार्ताकारों की आकाशवाणी पर दी गयी वार्ताओं का संग्रह है। इसमें विविध विषयों पर वार्ताकारों की वार्ताएं संकलित हैं। 135 पृष्ठों की इस पुस्तिका का मूल्य 60/– मात्र है। जिसे कल्पना प्रकाशन, बरेली (उ0प्र0) ने प्रकाशित किया है। इस संकलन में प्रो0 राम प्रकाश गोयल द्वारा आकाशवाणी के लिए लिखित उनकी वार्ता– 'उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम' संकलित है। आकाशवाणी केन्द्र बरेली से इस वार्ता की प्रसारण तिथि 26–06–93 है।

इस प्रकार प्रो0 रामप्रकाश गोयल द्वारा गद्य–साहित्य के क्षेत्र में प्रमुख रूप से 'टूटते सत्य' (उपन्यास) और 'दिल और दिमाग' (नाटक) की मात्र सर्जना की गयी। ये दोनो रचनाएँ ही उनकी गद्य–साहित्य के क्षेत्र में अनुपम रचनाएँ हैं। जो भाव, भाषा–शैली आदि सभी दृष्टि से उपयुक्त हैं। गद्य के क्षेत्र में उन्होंने अत्यन्त ही सृजन किया है, तथापि ये दोनों रचनाएँ– 'टूटते सत्य' (उपन्यास) व 'दिल और दिमाग' (नाटक) गद्य–साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट रचनाएँ है, जिनके कारण प्रो0 रामप्रकाश गोयल सदैव –साहित्य प्रेमियों के कंठहार बने रहेंगे।

पद्य के क्षेत्र में सृजन

दर्द की छाँव में

प्रो0 राम प्रकाश गोयल की इस काव्य कृति का प्रकाशन सन् 1987 ई0 में अयन प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। इसमें उनकी 32 गजलें, 15 कविताऐं, 8 शेर, 3 गीत और चार नयी कविताएँ हैं। 80 पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य 25/– रूपये मात्र है। अपने नाम के अनुरूप यह एक बेजोड़ कृति है।

प्रख्यात साहित्यकार डॉ0 कुँवर बेचैन ने इस काव्य संग्रह की भूमिका 'राम प्रकाश गोयल आँसुओं के सागर में तैरती एक नाव' शीर्षक से लिखी है। डॉ0 कुँवर बेचैन के शब्दों में ''इस प्रकार इस संग्रह की गजलों का सिंहावलोकन करने पर यह बात पूरी तरह से स्पष्ट हो जाती है कि श्री राम प्रकाश गोयल ने ये गजलें ऐसे ही नहीं लिख दी हैं वरन वे किसी ने लिखवाई हैं उनसे। जिस सत्ता ने उनसे ये रचनाएँ लिखायी हैं, वह निश्चित ही उनके मन पर राज्य किए हुए है। अन्यथा, वे ऐसी सुन्दर सहज, मनोरम, आत्मीय गजलें कैसे कह पाते जो उनकी होते हुए भी सभी को अपनी सी लगती हैं।'' श्री माहेश्वर तिवारी के अनुसार ''राम प्रकाश गोयल खालिस हिन्दुस्तानी सोच और जुबान के शायर हैं। अगर आपके पास भी उन्हीं जैसा सीधा–साधा खुला मन है तो आप उनकी शायरी के पास पहुँच पायेंगें। वे बड़बोले नहीं, बड़ी बोल और मोल के शायर हैं। और इन्सान इतने खूबसूरत है कि आमना–सामना होने पर आप फिराक साहब की तरह द्विविध में फंस सकते हैं।'' अपनी बात शीर्षक से स्वयं प्रा0 राम प्रकाश गोयल ने इस संग्रह की रचनाओं विशेषकर गजलों के बारे में लिखा है– ''इन गजलों में मैंने नया कुछ भी नहीं लिखा है, और न ही नयेपन का मुझे कोई भ्रम है। फिर भी अपने पाठकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि इसको पढ़कर यदि उनके मुँह से 'आह–वाह' निकले तो अवश्य अपनी 'आह–वाह' मुझे लिख भेजने की कृपा करें।''

वस्तुतः यह मुख्य रूप से गजल संकलन है लेकिन इसमें शेरों, गीतों और कविताओं को भी स्थान मिला है। संवेदनशील कवि ने अपनी बात के माध्यम से अपने कवि का प्रेरणा स्रोत सोलह वर्षीय पुत्र के असामयिक निधन से उत्पन्न दुख को माना है।

'दर्द की छाव में' जैसा कि इस संग्रह का नाम भी है, कविवर राम प्रकाश गोयल की इसमें समाहित अधिकांश रचनाएँ प्रेम की विविध स्थितियों को अपने कलेवर में छिपाए हुए है। जो बाहर इसी प्रकार महक रही हैं जैसे फूल की पांखुरियों में बन्द रहने पर भी सुगंध। जैसे फूल कहता है कि औरों की बात और ही जानें, मगर मेरा धर्म तो सुगंध देना है, उसी प्रकार कविवर राम प्रकाश गोयल भी कहते हैं–

'प्यार का राज कौन जान सका,
प्यार दरअस्ल इक इबादत है। शेख
की बात शेख ही जाने, मेराईमान तो
मुहब्बत है।

बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती, प्रो0 रामप्रकाश गोयल की मान्यता है कि सुखद जीवन के लिए प्रेम बहुत आवश्यक है, उसके बिना जीवन या तो रेत है या पत्थर। प्रेम हीवह तरलता है, वह प्रवाह है, जिसमें बहकर जिन्दगी धन्य होती है।वास्तव में, प्रेम तो सचमुच इन्सान की खास जरूरत है।

''सिर्फ यह तो तेरी–मेरी बात नहीं,
प्यार हर एक की जरूरत है।
मेरी नज़रों से देखकर देखो,
ये जहाँ कितना खूबसूरत है।

वास्तव में, प्यार भी एक अजीब–सा अहसास है, जिसे पाकर जीवन के कई रास्ते खुलते हैं। उन रास्तों में मुख्यतः दो रास्ते हैं– एक मिलन का और दूसरा विरह का, जिन्हें संयोग और वियोग भी कहते हैं। मिलन जहाँ जीवन को प्रफुल्लता और उमंग देता है, विरह उसमें आंसुओं का रंग भरकर एक नया रूप देता है। मगर दुनिया के लोग प्रेम को केवल दो शरीरों का मिलनही समझते हैं। प्रो0 रामप्रकाश गोयल ने प्रेम को मिलन के रूप में जाना तो है, किन्तु शारीरिक मिलन के रूप में नहीं, वर्न दो आत्माओं के पारस्परिक मिलन के रूप में। इसीलिए वे कहते हैं–

''प्यार जिस्मों के मिलन को ही नही कहते हैं,
जन्म जन्मों का ये रिश्ता कभी बदनाम न था।''

प्रेम का द्वितीय पक्ष वियोग या विरह है। वियोग जीवन में अन्धकार व निराशा भर जाता है।

प्रेम के ऐसे दर्द भरे रूप को देखकर जीवन की सतही अनुभूतियों वाले लागे प्रेम न करने की सलाह भी दे सकते हैं। किन्तु, क्या प्रेम किसी का कहा मानता है? प्रेम कितना निरंकुश हैं? कितना उद्दण्ड है? बस प्रेम ही प्रेम की बात मानता हैं प्रेम स्वयं में आग है, फिर भी हर कोई इस आग में कूदने के लिए लालायित रहता है। जैसे प्रेम की आग, आग न होकर शीतलता हो। वस्तुतः

आग भी शीतल हो जाती है, चन्दन बन जाती है, इस तथ्य को केवल प्रेम ही सिद्ध कर सकता है। प्रो0 रामप्रकाश गोयल का रचनाकार कहता है–

''ये इश्क आग है लिक्खा है ये किताबों में,
मगर इस आग में ही जिन्दगी निखरती है।''

वास्तव में इस प्रेम की प्रेरणा सौन्दर्य है। सौन्दर्य के प्रति समर्पित आँखें और मन दोनों मिलकर प्रेम का प्रस्फुटन कर पाते हैं। कविवर रामप्रकाश गोयल की रचनाओं का विषय जहाँ एक ओर प्रेम रहा है। वहीं दूसरी ओर सौन्दर्य भी।

रिसते घाव

प्रो0 रामप्रकाश गोयल की यह दूसरी काव्यकृति है। इसका प्रकाशन सन् 1992 ई0 में अयन, प्रकाशन नई दिल्ली ने किया है। इस संग्रह में प्रो0 रामप्रकाश गोयल की 40 जगलें, 11 कतए, 12 शेर और 8 अतुकान्त कविताऐं हैं। कृति के आरम्भ में 'अपन बात' शीर्षक से प्रो0 रामप्रकाश गोयल के विचार और श्री कृष्ण बिहारी नूर, श्री अनवर चुगताई द्वारा लिखित 'रिसते घाव' पर उनकी अपनी प्रतिक्रियाएं हैं। 'रिसते घाव' के अन्त में प्रो0 कृपा नन्दन और छोटे लाला शर्मा', 'नागेन्द्र' द्वारा लिखित उनकी समीक्षायें भी हैं। कुल मिलाकर यह काव्यकृति 110 पृष्ठों में समाहित है।

'रिसते घाव' की रचनाओं ने प्रो0 रामप्रकाश गोयल को एक अमिट तथा विशेष व्यक्तित्व प्रदान कर दिया है।इस संग्रह की रचनाएँ उनकी प्रखर प्रतिभा की परिचायिका हैं। भावपक्ष और कलापक्ष में परस्पर समन्वय का प्रयास प्रो0 रामप्रकाश गोयल ने अपनी रचनाओं मेंकिया है लेकिन, उनका भावपक्ष, कलापक्ष की अपेक्षा अधिक प्रभावी हुआ है। वे अति संवदेनशील रचनाकार हैं, जो रचनाकार अप्रत्यशित रूप से संवेदनशील होता है, उसके काव्य का भावपक्ष भी तुलनात्मक दृष्टि से अधिक प्रभावी रहता है। उनकी किसी भी रचना से इस तथ्य की पुष्टि की जा सकती है–

''जब किसी से भी प्यार होता है,
दिल पे कब इख्तियार होता है।
प्यार का जब खुमार होता,
उनका बस इन्तजार होता है।''

उपर्युक्त पंक्तियों में मानव–ह्रदय की कैसी सूक्ष्म और गहरी अनुभूतियाँ अभिव्यक्त हो रही हैं।

आलोचक एवं साहित्यकार डॉ0 नागेन्द्र के शब्दों में– ''कहीं जीने का उत्साह, कहीं पीड़ा, कहीं व्यंग्य और कहीं सलाह–प्रस्तुत कृति का प्रति पाद्य है। इस प्रति पाद्य में इस दौर की कचौट है।

एक समन्दर प्यासा सा

प्रो0 रामप्रकाश गोयल के इस काव्य संग्रह का प्रकाशन सन् 1999 में विवेक प्रकाशन, बरेली के द्वारा सम्पन्न हुआ है। इस संग्रह में प्रो0 रामप्रकाश गोयल की 84 जगलें, एक नजम, 28 कतए, 34 शेर 9 गीत, 8 अतुकान्त कविताएं और 15 क्षणिकाएँ है। ''इन्सान की तरह समन्दर भी बहुत प्यासा है। कितनी नदियाँ पी चुका है अब तक और हमेशा पीता रहेगा। इन्सान और समन्दर की यही प्यास ही 'एक समन्दर प्यासा सा' में है। इसकी एक बूँद भी अगर आपकी प्यास जगा सकी या बुझा सकी तो मैं अपने आपको बहुत खुशकिस्मत समझूँगा।''

सफर तन्हाइयों का

प्रो0 गोयल के इस काव्य संग्रह का प्रकाशन विवेक प्रकाशन, बरेली द्वारा सन् 2003 में किया गया है। इस संग्रह में गोयल जी की 109 गजलें, 1 नजिम, 38 कतए, 82 शेर, 10 गीत, 13अतुकान्त कविताएँ और 19 क्षणिकांए संकलित हैं।

'सफर तन्हाइयों का' में समाहित रचनाएं जीवन के विविध आयामों को अभिव्यक्त करती हैं। मूल रूप से ये रचनाएं प्रेम और सौन्दर्य के विविध रूपों को दर्शाती है। 'सफर तन्हाइयों का' की रचनाओं का एक उज्ज्वलतम पक्ष यह है कि तमाम निराशाओं और नाकामयाबियों के बीच रह कर भी इनका रचनाकार आस्थाऔर विश्वास के दामन को छोड़ता नहीं है–

''न कोई हमसफ़र मेरा न कोई राहबर मेरा,
मैं तन्हा ही गुजारूंगा सफर तन्हाइयों का।
तुम्हारे साथ गुजरे प्यार के पल याद रखूँगा,
करूँगा 'सोज' में पूरा सफ़र तन्हाइयों का।

'दीप यादों के' संग्रह की समीक्षा करते हुए समीक्षक मोनिका अग्रवाल लिखती हैं–''गोयल साहब एक हिम–खंड के समान हैं, जो धीरे–धीरे पिघल रहा है। जिस तरह गोमुख से निकल कर क्षीण–सी गंगा इठलाती–बलखाती मैदान में आकर विशाल जल–राशि की स्वामिनी होकर सागर की ओर अग्रसर होती जाती है, उसी प्रकार उनकी काव्य–यात्रा निरंतर बढ़ रही है।

मुस्कुराते ग़म

मुस्कराते गम़ प्रो0 रामप्रकाश गोयल का सद्यः प्रकाशित छठा काव्य–संग्रह है। कवि की रचनाएँ हिन्दी उर्दू की सम्मिलित शब्दावली, जुबान की मिठास और काव्य की सादगी का नमूना प्रस्तुत करती है। बतौर रचनाकार सोज जिस सादगी से गहराई में उतरते हैं उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता।

'सुख ही सुख और जिन्दगानी में जैसे कोई लकीर पानी में। तुम से आगाज था कहानी का, तुम ही अंजाम हो कहानी में।' शायर की इन पंक्तियों में सूफियाना अंदाज दिखाई देता है। मानवीय सम्बन्धों में सादगी की जगह चतुराई ने हमें बहुत नीचे तक पहुँचा दिया है। 'आप ईमां की बात करते हैं, मेरा ईमां तो बस मोहब्बत है।' बस इस सच को समझने में सारी सीमाएं टूट जाती हैं। आडम्बरों से मुक्ति मिल जाती है। 'आसमां में न मुझे इतना उड़ाओ आगे, मैं हूँ इन्सान फरिश्ता न बनाओ यारों।'

प्रेम और संवेदना के कवि प्रो0 रामप्रकाश गोयल आंसू के महत्व को समझते हैं। 'अपना गम लगता है, औरों का गम कम लगता है। मेरे दुख में उनका आंसू मुझको तो मरहम लगता है।' कवि अपनी नजर उन सारी स्थितियों पर रखता है जो आज की सामाजिक विद्रूपतायें हैं, जिनको बदलने की जरूरत है। 'घुटता ही रहा है जो गरीबी के सबब से, उस बाप ने बेटी का स्वयंवर नहीं देखा। हर फूल महकता है अलग अपनी महक से, कोई भी जमाने में बराबर नहीं देखा' देशकाल की चिंता में शायर का लहजा एक अलग रंग में है। 'सबसे मिलने का

सिलसिला रहा तन्हा जीने का हौंसला रखना। याद आये अगर शहीदों की, सामने अपने कर्बला रखना।' संग्रह के अंतिम पृष्ठों पर रचनाकार गोयल कुछ अधिक मुखर होते हैं। उनमें संकटग्रस्त समय की चिन्तायें भी हैं और अपसंस्कृति के परिदृश्यों का उत्खनन भी, शायद किसी अच्छी बनाबट के लिए। कुल मिलाकर संग्रह पठनीय है और रचनाकार के ह्रदय पक्ष को उजागर करता है।

इस संग्रह की भूमिका लिखते हुए 'मेरी बात' शीर्षक में प्रो0 रामप्रकाश गोयल ने प्रेम की महत्ता का ही गुणगान किया है। उनके शब्दों में इस संग्रह का वैशिष्ट्य इस प्रकार निरूपित किया गया है– ''..... काव्य का आधार प्रेम है। प्रेम मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाला तत्व है। वह अनेक को एक करता है। प्रेम में आकर्षण है, जीवन है। प्रेम मानव ह्रदय की सर्वश्रेष्ठ अनुभूति है। प्रेम की आँख वह देखती है जो कोई अन्य आँख नहीं देख पाती। प्रेम का कान वह सुनता है जो कोई अन्य कान नहीं सुन सकता। प्रेम की युक्ति युक्तिहीन है। प्रेम का पुरस्कार प्रेम है। प्रेमी का ह्रदय उसका स्वर्ग है। प्रिय का सुख ही उसका सुख है। ईसा ने परमात्मा को प्रेम कहा है और प्रेम को परमात्मा। जिसने प्रेम को नहीं जाना वह जीवन को भी नहीं जान पायेगा। प्रेम लौकिकता से आरम्भ होकर अलौकिकता की ओर बढ़ता है। प्रेम की पराकाष्ठा ही भक्ति है।

जीवनबहुआयामी हैं उसके इतने अधिक रंग–रूप हैं कि किसी निश्चित परिधि में उसे बाँध सकना असम्भव है। वह सीधा–सपाट नहीं, न हो सकता है और न किसी एक ही रंग में जिया जा सकता है। कवि की आत्मा उसके द्वारा रचित काव्य में व्यक्त होकर सम्मुख आती है। उसका काव्य ही उसे जानने का विश्वस्नीय माध्यम है। इन रचनाओं के झरोखों से मैंने जीवन में झांकने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत संग्रह के शीर्षक से स्पष्ट है कि यह वियोग श्रृंगार और प्रेम की रचनाओं का संकलन है। पहली रचना में ही कवि ने अपने जीवन दर्शन का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत किया है–

''दुश्मनों से भी दोस्ती रखिये,
तीरगी मे भी रौशनी रखिये।
जिन्दगी कामयाब करनी हो,
अपने होठों पे बस हँसी रखिये।'

'पहले दुनियाँ में मुहब्बत आई' शीर्षक से प्रस्तुत जुग़ल में भी कवि ने ऐसी ही भावपूर्ण व्यंजनाएँ दी हैं–

''पहले दुनियाँ में मुहब्बत आई,
बाद उसके ही इबादत आई।
जो भी करता है भला दुनिया का
दिल में उसके ही मुसर्रत आई।
दोस्ती खुद है खुदा को प्यारी,
दुश्मनी से ही मुसीबत आई।
कुछ भी नहीं दिल के सिवा 'सोज़' के पास,
दिल से दुनिया में अक़ीदत आई।''

इस संग्रह में न केवल विरह की मनोदशा का वर्णन हुआ है अपितु विरही पुरूष के मनोभावों को भी अंकित किया गया है। 'है कशिश इतनी तेरी आँखों में' शीर्षक से प्रस्तुत गज़ल में वियोगावस्था में प्रिया के स्मरण में कवि मन गा उठता है–

''है कशिश इतनी तेरी आँखों में,
लोग ले लेते दिल हैं हाथों में।
इतनी मस्ती है तेरी आँखों में,
जाम टिकता ही नहीं हाथों में।''

पुरस्कार व सम्मान

प्रो0 रामप्रकाश गोयल असाधारण साहित्यिक प्रतिभा के धनी हैं। साहित्य के भण्डार में अनेक कृतियाँ उन्होंने दी हैं जिसके लिये उन्हें सम्मानित किया गया है। जिसका विवरण निम्न प्रकार है–

1. 1987 में नगर की 38 संस्थाओं द्वारा साहित्यिकार के रूप में अभिनन्दन तथा 'पं0 राधेश्याम कथा–वाचक साहित्य पुरस्कार' से पुरस्कृत एवं सम्मानित।
2. 1991 में जेसीज बरेली द्वारा अभिनन्दन।
3. 1992 में नगर महापालिका, बरेली द्वारा कवि के रूप में नागरिक अभिनन्दन व सीतापुर की अनेक साहित्यिक संस्थानों द्वारा सम्मान।
4. 1993 में लायन्स क्लब बरेली विशाल द्वारा अभिनन्दन।
5. 1995 में लखनऊ की प्रसिद्ध नाट्य संस्था 'रंग–यात्रा' द्वारा कला–कर्मी के रूप में सम्मेलन एवं अभिनन्दन।
6. 2001 में हिन्दी साहित्यिक के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा के लिए 'संस्कार भारती सम्मान–2001'।
7. प्रकाश समाज सेवा समिति, लखनऊ द्वारा 'रूहेलखण्ड साहित्य सम्मान 2001'।
8. हिन्दी साहित्य सेवी संस्था 'साहित्य प्रोत्साहन, लखनऊ द्वारा 'डॉ0 रामकुमार वर्मा स्मृति सम्मान 2002'।
9. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा 'साहित्य भूषण' सम्मान 2003 में।
10. 'प्रो0 रामकुमार गोयल– जीवन और साहित्य' नामक लघु–शोध प्रबन्ध एम0 जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली में 2002 में प्रस्तुत किया गया।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आलोच्य रचनाकार प्रो0 रामकुमार गोयल बहुआयामी प्रतिभा–सम्पन्न रचनाकार हैं। उनका कृतित्व बहुआयामी है जो उनकी भावयित्री और कारयित्रि प्रतिभा का सटीक साक्ष्य प्रस्तुत करता है। जीवनगत संघर्ष और समयगत पीड़ाओं को आत्मसात करते हुए वे निरन्तर हिन्दी के प्रचार–प्रसार में निमग्न हैं। हिन्दी साहित्य को उन्होंने एक से एक महत्वपूर्ण कृतियां दी हैं।

प्रो0 रामप्रकाश गोयल के गद्य–साहित्य और पद्य–साहित्य का विश्लेषण करने से एक बात सामने आती है कि उनका पद्य–साहित्य गद्य–साहित्य की अपेक्षा अधिक सम्पन्न और बहु–आयामी है। इसमें जीवन के महत्वपूर्ण आयामों और मानवीय मूल्यों की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। साहित्यिक दृष्टि से उनका गद्य और पद्य साहित्य दोनों ही हिन्दी साहित्य की असाधारण धरोहर हैं। यह बात अलग है कि गद्य साहित्य पद्य साहित्य की अपेक्षा अल्प है, लेकिन हैंमहत्वपूर्ण। उनकी

प्रमुख कृतियाँ 'टूटते सत्य' (उपन्यास) और 'दिल और दिमाग' (नाटक) अपने पाठक को नया सन्देश देते हैं। इसी प्रकार 'दर्द की छांव में', 'रिसते घाव', 'एक समन्दर प्यासा सा', ''सफर तन्हाइयों का', 'दीप यादों के' तथा 'मुस्कुराते ग़म' महत्वपूर्ण पद्य–साहित्य की कोटि में आती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सं0 डा0 महेश 'दिवाकर', प्रो0 रामप्रकाशगोयल : अभिनन्दनग्रंथ (दिल ओर दिमाग) पृ0सं0 33*
2. *प्रो0 रामप्रकाशगोयल, टूटतेसत्य, भूमिका 'यह सत्य है।' पृ0सं0 449*
3. *प्रो0 रामप्रकाशगोयल, टूटतेसत्य, पृ0सं0 21 से 32 तक*
4. *उपरिवत् पृ0सं0 50*
5. *उपरिवत् पृ0सं0 51*
6. *उपरिवत् पृ0सं0 52*
7. *प्रो0 रामप्रकाशगोयल,दर्द की छाँवमे, डा0 कुवँर बेचैन पृ0सं0 23 से 24*
8. *उपरिवत्दर्दकीछाँवमे पृ0सं0 27 पृ0सं0 52*
9. *प्रो0 रामप्रकाशगोयल,भूमिका, रिसते धावश्रीकृष्णबिहारीनूर पृ0सं0 27 से पृ0 सं0 38*
10. *सं0 डा0 महेश'दिवाकर', अभिनन्दनग्रन्थ एकसमन्दरप्यासासा, 'दिल की बात' पृ0सं0 12*
11. *सं0 डा0 महेश 'दिवाकर', प्रो0 रामप्रकाशगोयल : अभिनन्दनग्रंथ पृ0 सं0 103*
12. *प्रो0 रामप्रकाशगोयल, एक समन्दरप्यासासा, पृ0सं0 17*
13. *प्रो0 रामप्रकाशगोयल,सफरतन्हाइयोका, पृ0सं0 1*
14. *प्रो0 रामप्रकाशगोयल,मुस्कुरातेगम, अपनीबात पृ0 सं0 4*
15. *उपरिवत् पृ0सं0 10*